विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
	५ वेदनाक्षेत्रविधान	
१	वेदनाक्षेत्रविधानमें ज्ञातव्य पदमीमांसा आदि ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख	१
२	क्षेत्रके सम्बन्धमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	२
	(पदमीमांसा)	
३	पदमीमांसामें क्षेत्रकी अपेक्षा ज्ञानावरणकी वेदना सम्बन्धी उत्कृष्ट–अनुत्कृष्ट आदि १३ पदोंका विचार	३
४	शेष कर्मोंके उक्त पदोंका विचार	११
	(स्वामित्व)	
५	स्वामित्वके जघन्य व उत्कृष्ट पदविषयक २ भेदोंका निर्देश	११
६	जघन्यके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	"
७	उत्कृष्टके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	१३
८	क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा	१४
९	क्षेत्रतः अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीकी अनेक विकल्पोंमें प्ररूपणा	२३
१०	अनुत्कृष्ट क्षेत्रविकल्पोंके स्वामियोंका प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा निरूपण।	२७
११	दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाकी प्ररूपणा ज्ञानावरणीयके समान बतलाकर वेदनीय कर्मकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीका निरूपण।	२९
१२	वेदनीय कर्मकी अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा करते हुए प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा अनुत्कृष्ट क्षेत्रभेदोंके स्वामियोंका निरूपण	३०
१३	वेदनीय कर्मके ही समान आयु, नाम और गोत्रकी उत्कृष्ट क्षेत्रवेदना बतला कर क्षेत्रतः ज्ञानावरणीयकी जघन्य वेदनाके स्वामीका निरूपण	३३
१४	वेदनीय सम्बन्धी अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामियोंकी अनेक भेदोंमें प्ररूपणा करते हुए चौदह जीवसमासोंमें क्रमशः वृद्धिको प्राप्त होनेवाले अवगाहनाभेदोंकी प्ररूपणा	३६
	(अल्पबहुत्व)	
१५	अल्पबहुत्वप्ररूपणामें जघन्य, उत्कृष्ट और जघन्य-उत्कृष्ट पदविषयक ३ अनुयोग-द्वारोंका उल्लेख।	५३
१६	जघन्य पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंसम्बन्धी जघन्य क्षेत्रवेदनाकी परस्पर समानताका उल्लेख।	"
१७	उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा ज्ञानावरणादि कर्मोंकी क्षेत्रवेदनाका अल्पबहुत्व।	५४
१८	जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उक्त वेदनाका अल्पबहुत्व।	५५
१९	मूल सूत्रोंद्वारा सब जीवोंमें अवगाहनाभेदोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा।	५६

२० एक सूक्ष्म जीवकी अपेक्षा दूसरे सूक्ष्म जीवकी, सूक्ष्म जीवकी अपेक्षा बादर जीवकी तथा बादर जीवकी अपेक्षा सूक्ष्म जीवकी अवगाहना सम्बन्धी गुणाकारविशेषोंका उल्लेख। ६९

२१ संदृष्टिद्वारा अवगाहनाभेदोंके स्वामियोंका निर्देश। ७१

६ वेदनाकालविधान

१ वेदनाकालविधानमें ज्ञातव्य ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख करते हुए कालके ७ मूल-भेदोंका उल्लेख करते हुए कालके ७ मूलभेदों एवं उत्तर भेदोंका स्वरूप। ७५

२ पदमीमांसा आदि उक्त ३ अनुयोगद्वारोंका नामोल्लेख ७७

(पदमीमांसा)

३ पदमीमांसामें कालकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयवेदना सम्बन्धी उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट आदि १३ पदोंकी प्ररूपणा ७८

४ शेष ७ कर्मोंकी कालवेदनाके उक्त १३ पदोंका विचार ८५

(स्वामित्व)

५ स्वामित्वके जघन्य व उत्कृष्ट पदविषयक २ भेदोंका निर्देश ८५

६ जघन्यके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना "

७ उत्कृष्टके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना ८६

८ कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा ८८

९ कालकी अपेक्षा अनेक भेदोंमें विभक्त अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामियोंकी प्ररूपणा ९१

१० प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा उक्त अनुत्कृष्ट स्थानविकल्पोंके स्वामियोंकी प्ररूपणा। १०८

११ ज्ञानावरणीयके ही समान शेष ६ कर्मोंकी भी उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट वेदना बतलाकर आयु कर्मकी उत्कृष्ट कालवेदनाके स्वामीका निरूपण। ११२

१२ कालकी अपेक्षा आयु कर्म सम्बन्धी अनुत्कृष्ट वेदनाकी प्ररूपणा। ११६

१३ कालकी अपेक्षा जघन्य ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीका विवेचन ११८

१४ कालकी अपेक्षा अजघन्य ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामिभेदोंकी प्ररूपणा। १२०

१५ दर्शनावरणीय और अन्तराय सम्बन्धी जघन्य व अजघन्य वेदनाओंकी ज्ञानावरणसे समानताका उल्लेख। १३२

१६ कालकी अपेक्षा जघन्य वेदनीयवेदनाके स्वामीका निर्देश। ,,

१७ वेदनीयकी अजघन्य वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा। १३३

१८ आयु, नाम और गोत्र सम्बन्धी जघन्य-अजघन्य कालवेदनाओंकी वेदनीयवेदनासे समानताका उल्लेख। १३४

१९ कालकी अपेक्षा जघन्य व अजघन्य मोहनीयवेदनाओंके स्वामियोंका उल्लेख १३५

(अल्पबहुत्व)

२० अल्पबहुत्व प्ररूपणामें जघन्य, उत्कृष्ट और जघन्य-उत्कृष्ट पदविषयक ३ अनुयोगद्वारोंका निर्देश। १३६
२१ जघन्य पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंकी जघन्य वेदना सम्बन्धी परस्पर समानताका उल्लेख। १३७
२२ उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंकी वेदनाका अल्पबहुत्व। "
२३ जघन्य-उत्कृष्ट अपेक्षा उक्त कर्मवेदनाका अल्पबहुत्व। १३८

प्रथम चूलिका

२४ मूलप्रकृति-स्थितिबन्धकी प्ररूपणामें स्थितिबंधस्थानप्ररूपणा, निषेकप्ररूपणा, आबाधाकाण्डकप्ररूपणा और अल्पवहुत्व, इन ४ अनुयोगद्वारोंका निर्देश करके उनकी आवश्यकताका दिग्दर्शन। १४०

(स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणा)

२५ चौदह जीवसमासोंमें स्थितिबन्धस्थानोंका अल्पबहुत्व। १४२
२६ इस अल्पबहुत्वद्वारा सूचित चार प्रकारके अल्पबहुत्वमेंसे स्वस्थान अव्वोगाढ अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा। १४७
२७ परस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व। १४८
२८ स्वस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व। १५०
२९ चौदह जीवसमासोंमें आठों कर्मोंका परस्थान अल्पबहुत्व। १५४
३० व्युत्पत्तिविशेषसे स्थितिबन्धस्थानका अर्थ आबाधास्थान करके उनकी प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्वके द्वारा व्याख्या। १६२
३१ प्रस्तुत अल्पबहुत्व प्ररूपणामें स्वस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व। १६३
३२ परस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व। १६४
३३ स्वस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व। १६६
३४ परस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व। १६९
३५ उपर्युक्त दोनों अल्पबहुत्वदण्डकोंकी सम्मिलित प्ररूपणामें स्वस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व १७७
३६ परस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व १७९
३७ स्वस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व १८२
३८ परस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व १९०
३९ चौदह जीवसमासोंमें संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व २०५
४० जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबन्धका अल्पबहुत्व २२५

(निषेकप्ररूपणा)

४१ अनन्तरोपनिधा द्वारा पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्त जीवोंमें ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तराय कर्मोंकी निषेकरचनाका क्रम २३८

४२ उपर्युक्त जीवोंमें मोहनीय कर्मकी निषेकरचनाका क्रम । २४२
४३ पंचेंद्रिय संज्ञी सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि पर्याप्त जीवोंमें आयु कर्मकी निषेकरचनाका क्रम २४५
४४ पंचेंद्रिय संज्ञीमिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंमें नाम व गोत्रकी निषेकरचनाका क्रम २४६
४५ पंचेंद्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टिअपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी निषेकरचनाका क्रम २४७
४६ पंचेंद्रियादिक अपर्याप्तों तथा सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें आयुकी निषेकरचनाका क्रम । २४८
४७ पंचेन्द्रिय असंज्ञी, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर एकेंद्रिय पर्याप्तोंमें आयुको छोडकर शेष सात कर्मोंकी निषेकरचनाचा क्रम । २४९
४८ उपर्युक्त जीवोंमें आयु कर्मकी निषेकरचनाका क्रम । २५१
४९ उपर्युक्त अपर्याप्तोंमें तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी निषेकरचनाका क्रम २५२
५० परम्परोपनिधाके द्वारा विविध जीवोंमें निषेकरचनाक्रमकी परूपणा २५३
५१ श्रेणिप्ररूपणासे सूचित अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा । २५८

(आबाधाकाण्डकप्ररूपणा)

५२ पंचेंद्रिय संज्ञी व असंज्ञी आदि जीवोंमें आयुको छोडकर शेष सात कर्मोंके आबाधाकाण्डक करनेका नियम । २६७
५३ आयुकर्मसम्बन्धी आबाधाकाण्डकप्ररूपणा न करनेका कारण । २६९

(अल्पबहुत्व)

५४ पंचेंद्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंमें सात कर्मोंकी जघन्य-उत्कृष्ट आबाधा आदिका अल्पबहुत्व । २७०
५५ पंचेंद्रिय संज्ञी व असंज्ञी पर्याप्त जीवोंमें जघन्य व उत्कृष्ट आबाधा आदिका अल्पबहुत्व । २७३
५६ पंचेन्द्रिय संज्ञी व असंज्ञी अपर्याप्तों तथा शेष चतुरिन्द्रियादि पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंमें आयुसम्बन्धी जघन्य आबाधा आदिका अल्पबहुत्व । २७५
५७ पंचेन्द्रिय असंज्ञी आदि पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी आबाधा आदिका अल्पबहुत्व । २७६
५८ एकेन्द्रिय बादर व सूक्ष्म पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी आबाधा आदिका अल्पबहुत्व । २७८
५९ श्री वीरसेन स्वामीके द्वारा प्रकृत अल्पबहुत्व सूचित स्वस्थान-परस्थान अल्पबहुत्वोंमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा । २७९
६० परस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा । २८७
६१ प्रकृत अल्पबहुत्व सम्बन्धी विषम पदोंकी पंजिका । ३०३

द्वितीय चूलिका

६२ इस चूलिकाके अन्तर्गत स्तितिबन्धाध्यवसायप्ररूपणामें जीवसमुदाहार, प्रकृति-समुदाहार और स्थितिसमुदाहार, इन तीन अनुयोगद्वारोंका निर्देश। ३०८

६३ प्रकृत चूलिकाकी अनावश्यकताविषयक शंका और उसका परिहार। "

(जीवसमुदाहार)

६४ ज्ञानावरणादि ध्रुवप्रकृतियोंके बन्धक जीवोंके साताबन्धक व असाताबन्धक इन दो भेदोंका निर्देश। ३११

६५ साताबन्धकोंके ३ भेद। ३१२

६६ असाताबन्धकोंके ३ भेद। ३१३

६७ उक्त भेदोंमें सर्वविशुद्ध व संक्लिष्टतर अवस्थाओंका निर्देश। ३१४

६८ साताके चतुःस्थानबन्धकादिकोंमें तथा असाताके द्विस्थानबन्धकादिकोंमें जघन्य स्थिति आदिके बंधनेका नियम। ३१६

६९ ज्ञानावरणादि ध्रुवप्रकृतियोंके स्थितिविशेषोंको आधार करके उनमें स्थित जीवोंकी प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व इन ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा प्ररूपणा। ३२०

७० ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोगके द्वारा बंधने योग्य स्थितियोंका उल्लेख। ३३२

७१ छह यवोंके अधस्तन व उपरिम भागोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा। ३३४

७२ साताके व असाताके चतुःस्थानादिबन्धकोंका अल्पबहुत्व। ३४१

(प्रकृतिसमुदाहार)

७३ प्रकृतिसमुदाहारमें प्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व इन दो अनुयोगद्वारोंका निर्देश करके प्रमाणानुगमके द्वारा ज्ञानावरणादिके स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी प्रमाण प्ररूपणा।

७४ उक्त स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंका अल्पबहुत्व।

(स्थितिसमुदाहार)

७५ स्थितिसमुदाहारमें प्रगणना, अनुकृष्टि और तीव्र-मन्दता इन ३ अनुयोगद्वारोंका निर्देश। ३४९

७६ प्रगणना द्वारा ज्ञानावरणीयादि कर्मोंकी जघन्य स्थिति आदि सम्वधी स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी गणना। ३५०

७७ अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधाके द्वारा उक्त स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी प्ररूपणा। ३५२

७८ श्रेणिप्ररूपणासे सूचित अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्वके द्वारा उपर्युक्त स्थानोंकी प्ररूपणा। ३५८

७९ अनुकृष्टि द्वारा उक्त स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी समानता-असमानताका विचार। ३६२

८० तीव्र-मन्दता द्वारा उपर्युक्त स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंके अनुभाग सम्बन्धी तीव्रता व मन्दताका विचार। ३६६